SEWA Rashtriya Patrika

SEWA's Mouthpiece Integrating Women Workers in National Development

सेवा राष्ट्रीय पत्रिका

राष्ट्रीय विकास में कामगार महिलाओं का संयोजता सेवा का मुखपत्र

Issue No.: 2/3 May/June 2016 Advisors: Manali Shah, Shikha Joshi, Sonia George Internal circulation

WASTE PICKERS GET A MEANING IN GOVERNMENT RULES

New Solid Waste Management Rules Say Traditional Waste Pickers Should Be Given Priority In Garbage Disposal By Civic Bodies

There is a good news for waste-pickers, the lakhs of nondescript women with waste-bag hung over their shoulders collecting garbage from roads, societies and waste dumps is a common sight across cities in India. This ubiquitous section, that comprises 1-2 percent population of every city and is an integral part of the urban set-up, has now been officially acknowledged in the Solid Waste Management Rules 2015 released by the union Ministry of Environment and Forests (MoEF) which has also attributed them a definition.

"Waste picker" means a person or group of persons informal engaged in the collection and recovery of reusable and recyclable waste from the source of waste generation – the streets, the bins, material recovery facilities, processing and waste disposal facilities for sale to recyclers directly or through intermediates to earn their livelihood.

This definition and acknowledgement of waste pickers considered one of the most marginalized workers has come as a big boost for the community that struggles to make ends meet by rummaging through waste–tonnes of which is generated in each city.

In Ahmedabad alone, there are around 40,000-50,000 waste pickers who are self-employed and earn anywhere from Rs 50 to Rs 100 per day. Most of the waste pickers are women and these workers are self-employed. They belong mostly to the Valmiki community or the Dalit community, both being scheduled castes. These workers have no other skills except waste picking and pick all kind of waste which includes waste papers, torn shoes, broken glass, wood pieces, thin polythene bags, electronic waste disposal, plastic to bones and even human hair.

Rajiben Parmar, who has been working as a waste-picker since 1992 said she was ecstatic that union government had acknowledged them and their work in the rules framed for Solid Waste Management.

Raji says that she and her other waste picker sisters would benefit the most if the government also makes rules to give them priority in waste collection “It is a big thing that the union government has defined a waste picker. The next big step would be to give us priority in work for waste disposal. Currently, most of the waste disposal work is awarded on contract basis to big contractors by civic body. This has robbed us of employment”, says Rajiben. Jassi Rathod (65) who works as a waste picker since 1972 says that after big contractors were given the job of waste collection, many waster pickers find themselves deprived of segregating waste at source and earning few extra rupees that would go a long way in supporting food and education of their children.

Manali Shah, Sewa vice president and head of urban union said that most significant thing in the rules is that it directs authorities to establish a system to recognize organizations of waste pickers and integrate these unauthorized waste pickers in solid waste management including door to door collection.

“When municipal corporations entrust the job of garbage disposal to big contractors, they ruthlessly exclude the informal waste collectors leaving them in a lurch, struggling for a living”, says Shah.

“Nearly 20-30 percent of waste disposed by a city is recyclable. When traditional waste pickers go for door to door collection, they segregate the recyclable waste and help environment,” said Shah.

SEWA LED SUCCESSFUL PILOTS FOR WASTE MANAGEMENT BY WASTE-PICKERS OVER COMPANIES

Majority of the municipal corporations and municipalities across Gujarat and India are giving contracts to big companies for lakhs of tonnes of waste generated on a monthly basis. In such times, Sewa has successfully led two pilot projects – one in Vejalpur in Ahmedabad and another in Katihar in Bihar – which proved that without the frills of mechanized machines, big deposits and fancy equipment, traditional communities can do an equally job of segregating and disposing waste. Waste-pickers united by a Sewa cooperative divided the Vejalpur municipality into beats. Women distributed leaflets and made citizens aware of segregating dry waste from wet waste. The waste-pickers would set aside recyclable waste and take the other waste to the nearest designated picking point using a hand cart to be picked by corporation vehicles. Vejalpur municipality won and award for this experiment which was emulated across the city. Unfortunately, the tendering process for waste disposal was so designed that only big companies could qualify.

Similar ‘inclusive waste management’ project was implemented in Katihar by Sewa Bihar where instead of companies poor traditional waste pickers from the most marginalized Dom caste who also known as Mahadalits were involved. The door-to-door collection system in 12 out of 45 wards proved successful and helped raise income of women waste pickers from Rs 1,500-2,000 per month to Rs 4,500 per month.

The model was accepted by Katihar municipal corporation and Sewa Bihar invited for bidding but certain conditions were put which due to cooperative lost the bid.

The new solid waste management rules specify that it is responsibility of local bodies to integrate traditional waste pickers in waste disposal. Sewa sincerely hopes that civic bodies would alter their bidding conditions to ensure that small women’s collectives can also win contracts and are given preference over big companies.

कचरा बीनने वालों को सरकार के अधिनियामों में मान्यता मिली

नए ठोस अपशिष्ठ प्रबंधन नियमों के अनुसार कचरा बिनने वालों को कचरा विक्रय करवाने वाले नगर निकाय में प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

भारत में लाखों महिलाओं के कंधों पर पॉलीथीन की थैली टांगे सड़कों और गलियों के पास से कचरा उठाया देखा जाता है, जो कि बहुत आम बात है। यह हर शहर की 1–2 प्रतिशत की आबादी का हिस्सा है और अब आधिकारिक तौर पर इन्हें ठोस अपशिष्ठ प्रबंधन नियम 2015 के अंतर्गत मान्यता मिल गई हैं।

कचरा बिनने वाले एक या एक से अधिक व्यक्ति होते है जो सड़कों से, कुड़ेदानों से फिर से इस्तेमाल की जा सके, ऐसी चीज़ो को इकट्ठा करते है और फैक्ट्री में या दलाल के द्वारा बेचकर अपना घर चलाते हैं।

मान्यता मिलने से कचरा बिनने वालों को बहुत प्रोत्साहन मिला हैं।

सिर्फ अहमदाबाद में ही 40,000–50,000 कचरा बिनने वाले है जो रोजाना 50–100 रूपये कमाते हैं। ज्यादातर यह काम महिलाएँ ही करती है जो खुद के लिए ही यह काम करती हैं। यह वाल्मिकी और दलित समुदाय से आते है जो कि अनुसूचित जातियाँ हैं। इन लोगों को कचरा बिनने के अलावा और कुछ नहीं आता हैं। यह हर तरह का कचरा बिनते है जैसे कि फटे जूते, रद्दी, टूटा काँच, पॉलीथीन की थैलियाँ, प्लास्टिक, हड्डियाँ और यहाँ तक कि बाल भी।

राजी बेन परमार, भी एक कचरा बिनने वाली महिला है जो यह काम 1992 से कर रही है और यह सुनकर बहुत खुश है कि सरकार ने उन्हें मान्यता प्रदान की।

राजी कहती है कि दूसरे कचरा बिनने वाली महिलाओं को भी इससे लाभ होना चाहिए और सरकार की उन्हें प्राथमिकता देनी चाहिए '' यह बहुत बड़ी बात है कि सरकार ने कचरा बिनने वालों को मान्यता दी है। अगला बड़ा कदम होगा उन्हें कचरा विक्रय करने के काम में प्राथमिकता देना। अभी ज्यादातर काम बड़े ठेकेदारों को दे दिया जाता हैं जिस वजह से हम बेरोजगार हो जाते हैं।''

जस्सी राठोड़ (65) 1972 से कचरा बिनने का काम कर रही हैं। वह कहती है कि जब से कचरा विक्रय का काम बड़े ठेकेदारों को मिला है तबसे कचरा बिनने वालों के रोजगार का सहारा छिन गया है जो कि भविष्य में उनके बच्चों को पढ़ाने लिखाने में सहारा देता।

मनाली शाह सेवा उपाध्यक्ष और शहरी संघ की प्रमुख कहती है कि कचरा बिनने वालों को मान्यता मिलने के बाद ग्राम पंचायतों व शहरी अधिकारियों का यह फर्ज है कि वे उनका एक संगठन स्थापित करे।

' घर–घर जाकर कचरा बिनने वालों को एकत्रित करना बहुत जरूरी है क्योंकि बड़े ठेकेदार कचरा विक्रय का काम बिना कचरा बिनने वालों की सहायता करते है जिससे उन्हें अपनी जीवन चलानें में मुश्किले होती है'' – शाह। कचरा बिनने वालों को कचरा विक्रय करने में जोड़ने से शहर साफ रहता है और उनका जीवन भी ढंग से चलता हैं।

'20–30 प्रतिशत कचरा फिर से इस्तेमाल किया जा सकता हैं। घर–घर जाकर कचरा बिनने वाले फिर से इस्तेमाल किए जाने वाला कचरा अलग करते है जिससे साफ–सफाई भी ज्यादा रहती है। और तो और इनका सभी लोगों से अच्छा रिश्ता बन जाता है जो कि सामाजिक ताना–बाना बना रहता है''– शाह।

सेवा ने कम्पनीयों के ऊपर कचरे के प्रबंधन का प्रारम्भिक प्रयोग का सफल नेतृत्व कचरा बिंनने वालो के लिये किया।

ज्यादातर नगरनिगम बड़े ठेकेदारों को लाखों टन का कचरा हर महिने देते हैं। ऐसे समय में सेवा ने दो सफल परियोजनाएँ करी–एक वेजालपुर, अहमदाबाद में और दूसरी कटिहार, बिहार में–जिससे यह साबित हुआ कि बिना बड़ी मशीनों व ज्यादा पैसों के भी कचरा विक्रय किया जा सकता हैं। कचरा बिनने वालों को सेवा ने एकत्रित करके वेजलपुर में दो भागों में बाँटा। महिलाओं ने गीले कचरे और सूखे कचरे को अलग करने के बारे में लोगों को पर्चे देकर बताया। कचरा बिनने वाले पुनः इस्तेमाल में आने वाले कचरे को अलग कर दूसरा कचरा ठेलों पर लेकर नगरनिगम की गाड़ियों के पास छोड़ देते।

वेजालपुर के लोगों को इसके लिए पुरस्कार भी मिला। परन्तु फिर भी बड़े ठेकेदारों को ही परियोजनाएँ मिली। सेवा बिहार ने कटिहार, में भी यह परियोजना की गई। इसमें महादलित भी शामिल थे। 12 में से 45 वार्ड में यह सफल था जिस वजह से महिलाओं की आय 2500–200 से 4500 हो गई। इसे कटिहार नगरनिगम ने मान्यता दे दी थी परन्तु कुछ शर्तो के कारण सेवा बिहार हार गई। नए नियमों के मुताबिक लोकल अधिकारियों का फर्ज है कि वो कचरा बिनने वालों को कचरा विक्रय के काम में शामिल करे। सेवा बस यही चाहती है कि नगर निगम अपनी कुछ शर्तो को बदले ताकि महिलाओं के लघु सामुहिक प्रयास भी अनुबंध प्राप्त कर सके और उन्हें बड़ी कम्पनीयों के ऊपर प्राथमिकता दी जावे।

SEWA HELPS PUT 'HOME BASED AND CONSTRUCTION WORKERS' IN GLOBAL SUPPLY CHAIN COMMITTEE REPORT

Sewa Made The Recommendation In Favor Of Three Crore Home Based Workers In India

The International Labour Organization held its annual tripartite meeting between workers, employers and government representatives on the topic of Decent Work in Global Supply Chains between 29 th May and 10 th June, 2016 in Geneva.

SEWA made a very important Recommendation of putting forth the need to include home workers in the final conclusions on decent work in global supply chains.

It needs mention that there are over 3 crore home based workers in India and majority of them are women. Across the globe, the home-based workers remain marginalized and are not even included in the list of labour that is awarded minimum wages also reiterated points ratify the convention in individual countries and give minimum wage to homeworkers, giving official recognition and raised awareness on the absence of data collection on homeworkers.

General secretary of Sewa Jyoti Macwan speaking at an event on home-based workers organized on side events of the International Labour Conference (ILC).

Besides, SEWA put forth the issue of Transition from Informal to Formal Economy and paying of minimum wage depending on living wages and not piece rate to the workers. It was stressed that in the process of transition there should be concrete efforts to protect the livelihood of the workers. The issues of migrant and women workers await special attention in the discussion on supply chains.

SEWA highlighted how the Government of India has contracted with international companies operating in vast global supply chains to provide infrastructure facilities to India ignoring theplight of local construction workers. These supply chains often rely heavily on sub-contracting, or 'indirect sourcing'.

SEWA also observed that construction workers were nowhere mentioned in the committee report. It had previously submitted to the working group chair the conditions and need to recognize work deficit in the garment and construction industry. This point was put forth along with the need to include cooperatives which was amended by the committee-another honor in SEWA's basket.

In the internal discussions, SEWA put forth the plan to liaison with ILO Delhi office which is a part of several government committees. Besides, plans were made to get a 'National Policy on Home workers' implemented to complement the Convention 177 on homeworkers.

SEWA successfully involved in the inclusion of the agenda of Homeworkers and Informal Economy in the committee report along with focus on cooperatives and construction industry.

In this process from SEWA , General Secretary ,Jyoti Macwan, and Sonia George ,General Secretary, SEWA Kerala, participated.

सेवा की बदौलत अब घरखाता और निर्माण श्रमिक विश्व रिपोर्ट में!

सेवा ने घरखाता श्रमिकों और निर्माण श्रमिकों को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर समिति की रिपोर्ट में रखवाने में सहायता की।

अंतरराष्टीय श्रम संगठन की वार्षिक विपक्षीय बैठक जो कि श्रमिक, मालिक व सरकार के प्रतिनिधियों के बीच वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में डिसेन्ट काम के विषय पर 29 मई से 10 जून 2016 तक जिनेवा में हुई। सेवा ने बहुत ही महत्वपूर्ण सिफ़ारिश की वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में सम्मानिय कार्य पर अंतिम निष्कर्ष में घरखाता श्रमिकों की आवश्यकताओं को शामिल करवाने में किया।

यहॉ पर इस बात का उल्लेख करने की आवश्यकताओं है कि भारत में 3 करोड़ से भी ज्यादा श्रमिक धरखाता कामगार है। जिनमें ज्यादातर महिलाये है। पूरे विश्व में घरखाता श्रमिक हासिये पर है और उन्हें उन श्रमिकों की सूची में भी शामिल नहीं किया गया है जिनको न्यूनतम वेतन मिल रहा है।

सभा में उन बिन्दुओं को दोहराया गया की कुछ देशो ने व्यक्तिगत रूप से घरखाता श्रमिकों को न्यूनतम वेतन देकर उनको अधिकारिक पहचान दी है और इस जागरूकता को बढ़ाया है कि घरखाता मजदूरों के ऑकड़ो को एकत्रित करने का अभाव है।

इसके अलावा सेवा ने इस मुद्दे को रखा की असंगठित क्षेत्र से संगठित क्षेत्र में बदलाव उन्हें न्यूनतम वेतन देगा। जो कि श्रमिको के जीवन जीने का वेतन होगा ना कि पीसरेट। इस बात पर जोर दिया गया की बदलाव की इस प्रक्रिया में स्थाई प्रयास किये जाने चाहिये जिसमें श्रमिको की जीविका को बचा कर रखा जाये। प्रवासी और महिला मजदूरों के मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया जाये। जब आपूर्ति श्रृंखला पर बहस हो। सेवा ने इस बात पर प्रकाश डाला की भारत सरकार ने किस प्रकार से अर्न्तराष्ट्रीय कम्पनीयों के साथ अनुबन्धन करते हुये विशेष आपूर्ति श्रृंखला हेतु संसाधन की सुविधाये प्रदान की हैं व स्थानीय निर्माण श्रमिकों की दुर्दषा को नजर अन्दाज किया है। यह आपूर्ति श्रृंखला अक्सर उपअनुबन्ध या अप्रत्यक्ष स्त्रोतो पर भारी भरोसा करती है। सेवा ने यह भी देखा की निर्माण श्रमिको का उल्लेख समिति की रिपोर्ट में हो । कार्य समूह की अध्यक्ष को कपडे व निर्माण उघोग की परिस्थितियों और उनके काम की पहचान की आवश्यकताओं को पूर्व में ही प्रस्तुत कर दिया गया था।

इस बिन्दु साथ ही सहकारी संस्थाओ की आवष्यकता को सामिल करने को प्रस्तुत किया गया। जिसको समिति ने संषोधित कर सेवा की झोली में सम्मान के साथ डाल दिया।

सेवा ने प्स्ट दिल्ली कार्यालय के साथ जुडाव करने की योजना को सामने रखा जो कि सरकार की विभिन्न समितियों का हिस्सा है। इसके अतिरिक्त योजना बनाई गई की घरखाता मजदूरो के लिये राष्ट्रीय नीती का क्रियान्वयन जो कि घरखाता श्रमिको 177 नं. की की पूर्ति करता है। घरखाता श्रमिको व असंगठित क्षेत्र के मुद्दो को समिति की रिपोर्ट में शामिल कराने के साथ ही सहकारी संस्थाये और निर्माण उघोग पर ध्यान केन्द्रीत कराने में सेवा ने सफलता हासिल की।इस प्रक्रिया में सेवा की जनरल सेक्रेटरी, ज्योति मेकवान व सेवा केरला की जनरल सेक्रेटरी सोनिया जार्ज ने भागीदारी की।

धरखाता पतंग कामगार बहनें

LABOUR DAY: UNITED WE STAND FOR OUR RIGHTS

Sewa Celebrates Labour Day With Calls For Rights For Salt Workers In Gujarat, Open Letter To Cm In Bihar And Toilets For Fishing Community In Kerala

Women salt workers made posed some tough questions to labour minister Vijay Rupani at the Labour Day celebrations on May 1, 2016. Over 70,000 salt workers in Gujarat toil in inhuman conditions to produce 70% of India's salt– the white gold. Women raised the issue of non-renewal of lease of land for salt manufacturing which lapsed in 1995 which has got stuck in a dispute between the revenue and forest department. "We are deprived of welfare schemes including bank loans. The issues should be resolved", women requested the minister. Women salt workers also demanded subsidy in loans for 'solar pumps' distributed by Sewa which has led to savings in diesel cost. Sewa has distributed over 200 solar pumps.

The minister assured women that government is contemplating to draft an act for the salt workers as well as forming a welfare board.

MAY 1 — LABOUR DAY OR SEWA LIBERATION DAY!

It was on May 1 that Sewa was made to leave Majoor Mahajan and mandated to set up its own office. "It was a Sunday when we left with our files and a typewriter and came into the Sewa office. Then Renaben has said, 'Wow! Its Sewa liberation day' But we should not dwell in the past. We have lot of work to finish moving ahead", said Ela Bhatt, founder of Sewa. Elaben said that she distinctly remebers the day when Gujarat was carved out from Maharashtra on May 1, 1960. "Two qualities people had then– parampara (tradition) and Saadgi (simplicity). The rich would go out of their way to make their wealth useful for the needy and created social and educational institutes of national repute. Simplicity was such that rich would never flaunt their wealth. These qualities should never be forgotten as they are critical for a healthy society", said Elaben.

SEWA MP WOMEN BAT FOR FOOD SECURITY, WATER FOR WOMEN ON MAY DAY

Sewa Madhya Pradesh submitted a representation to CM Shivrajsingh Chauhan stating that CM had launched some great initiatives for welfare of women, especially tribal women, in the state like 'Beti Bachao'. Food security however still eluded women workers involved rolling bidis, pulling handcarts, plucking tendu-patta, tribals, dalits and SC women despite the government implementing National Food Security Act under Annapurna Yojana. "Women especially in rural, tribal families do not easy access to ration cards as filling registration forms has become difficult due to new technology. We request you to simplify this process so that women can get cheap grains", said the letter. "The problem of water is also acute and panchayat officers should be ordered to resolve it".

SEWA KERALA CALLS FOR TOILETS FOR FISHER WOMEN

Sewa Kerala celebrated Labour Day in a fishermen and women's village. There is a huge deficit of toilets in homes of the fishing community. Stress was laid upon building toilets for families of the fishing community, keeping their environment clean and protecting their health. Sewa Kerala wonders if this issue can be attached with the 'Swachh Bharat' campaign and toilets built for fisher women.

SEWA BIHAR WOMEN WORKERS WRITE OPEN LETTER TO CM

Women from the unorganized sector united by Sewa Bihar wrote an open letter to Bihar CM Nishit Kumar on Labour Day. "We thank you for freeing us from the poison of liquor. But many addictive substances are being abused by poor child workers and men in chawls, colonies, villages and cities. We urge you to implement complete prohibition on all intoxicant substances in Bihar. Only then our daughters would study, move forward in life and most importantly be safe. One lakh women workers of Sewa Bihar."

मजदूर दिवसः संगठित होकर हम हमारे अधिकारो के लिये खड़े हुये हैं।

गुजरात में नमक कामगारो के अधिकार, बिहार में मुख्यमंत्री को खुली चिट्ठी, केरल में मछली पकड़ने वाले समुदाय के लिये शौचालय की पुकार करते हुये सेवा ने मजदूर दिवस मनाया।

1 मई 2016 को मजदूर दिवस के उपलक्ष्य में गुजरात की नमक महिला कामगारो ने श्रममंत्री श्री विजय रूपानीजी के सामने कठिन प्रश्न रखे करीब 70,000 नमक कामगार बहुत ही अमानवीय तरीके से कठिन परिश्रम करते हुये भारत के 70 प्रतिशत नमक का उत्पादन कर रहे है। जो कि सफेद सोना हैं। महिलाओं ने नमक उत्पादन में उपयोग आने वाली जमींन की लीज के नवीनीकरण नहीं होने के मुद्दे को उठाया जो कि 1995 से खत्म हो गई थी किन्तु रेवेन्यू और वन विभाग के झगड़े में नहीं मिली महिलाओं ने मंत्रीजी से अनुरोध किया की हम सभी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा की योजनाओं बंचित हो गये हैं। जिसमें बैंक ऋण भी शामिल हैं। महिला कामगारो ने सोलर पम्प पर सब्सीड़ी की मांग की जो कि सेवा द्वारा वितरित किये गये हैं। जिसमें डिजल की खपत बच रही हैं। सेवा ने 200 सोलर पम्प वितरित किये हैं। मंत्रीजी ने आश्वासन दिया की सरकार जल्दी ही नमक कामगारों के लिय कानून का मसौदा तैयार करेगी व साथ ही उनको सामाजिक सुरक्षा मिले इसलिए एक सामाजिक कल्याण मंडल बनायेगी।

1 मई – मजदूर दिवस था सेवा आजादी दिवस

वह 1 मई ही थी जिस दिन सेवा ने मजूर महाजन को छोड़कर अपना स्वयं का कार्यलय स्थापित किया था। उस दिन रविवार था जब हमने उपनी फाईले, टाईप राईटर के साथ सेवा कार्यलय आये थे। तब रेनाना बेन ने कहा था '' वाह–सेवा का आजादी दिवस''

सेवा की संस्थापिका ईला बेन ने कहा–''की हमें भूतकाल में अपना ध्यान नहीं केन्द्रीत करना है बल्की हमें काफी सारा काम खत्म करके आगे की और बढ़ना है''

इला बेन ने कहा कि मैं साफ तौर पर उस दिन को याद करना चाहती हुं जब 1 मई 1960 को गुजरात महाराष्ट्र से खुद ही बाहर निकला था। जब दो तरह के गुणो के व्यक्ति थे जिनमें परम्परा और सादगी थी।

अमीरो ने अपनी राह से अलग हटकर अपने धन को जरूरतमंदो के उपयोग में आने वाले राष्ट्रीय सामाजिक व शैषणिक संस्थानो की रचना की। सादगी इतनी थी कि अपने धन पर कभी इतराये नहीं। इला बेन ने कहा की इस गुण को हम कभी नहीं भूल सकते क्योंकि ये स्वस्थ समाज के लिये जरूरी थे।

सेवा म प्र की सदस्यो ने मई दिवस पर महिलाओं के लिये खाद्य सुरक्षा व पानी की मांग उठाई

सेवा म प्र ने मुख्यमंत्री श्री शिवराज चौहानजी को ज्ञापन सौपते हुये कहाँ की मुख्यमंत्रीजी ने राज्य में महिलाओं के कल्याण के लिये सार्थक काम प्रारंभ किये है। खास कर आदिवासी महिलाओं के लिये जैसे '' बेटी बचाओं'' राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून को लागू करते हुये अन्नपूर्णा योजना प्रारंभ की जिससे बीड़ी बनाने वाली, हाथ ठेला चलाने वाली, तेन्दुपत्ता तोड़ने वाली, आदिवासी दलित व अनुसूचित महिलाओं को शामिल करते हुये उन्हें खाद्य सुरक्षा प्रदान की हैं। महिलायें जो खासकर जो ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। आदिवासी परिवारों की है उन्हें नई तकनीकी की वजह से राशन कार्ड के लिये आवेदन भरना मुश्किल हो रहा है इनके परिचय पत्र का समय समाप्त हो जाता है व खाद्य पर्ची भी निरस्त हो जाती है। पहले परिचय पत्र देने का काम श्रमविभाग था किन्तु अब उसे नगरनिगम को दे दिया गया हैं। हम आपसे अनुरोध करते है कि आप इस प्रक्रिया को सरल करे ताकि महिलाओं को सस्ता अनाज मिल सके। पीने के पानी की समस्या काफी गम्भीर है। ऐसी कोई योजना जिससे पीने का पानी आसानी से उपलब्ध हो के आदेश पंचायत पंचायत अफसरो को दिये जावे। शौचालयो में भी पानी नही हैं। अतः इस समस्या का समाधान तुरन्त किया जावे।

सेवा बिहार की महिला कामगार सदस्यों ने मुख्यमंत्री को खुली चिट्ठी लिखी।

मजदूर दिवस पर असंगठित क्षेत्र की महिला कामगार जो कि सेवा बिहार द्वारा संगठित की गई है उन्हौने बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतिश कुमार जी को खुली चिट्ठी लिखी, हम आपको धन्यवाद् देते है कि आपने हमें शराब के जहर से आजादी दी। परन्तु अभी भी कई ऐसे नशे के पदार्थ है जिन्हे गरीब बाल मजदूर व आदमी चाल, कॉलोनी, गांव शहरो में इस्तेमाल करते है। इन सब खतरनाक पदार्थो के इस्तेमाल से वे गम्भीर बिमारीयों की गिरफ्त में आ जाते हैं। हम आपसे आग्रह करते है कि आप सभी प्रकार के खतरनाक पदार्थो की बंदीकरण का क्रियान्वयन बिहार में करे। तब ही हमारी बच्चीयाँ पढ़ सकेगी व अपनी जिन्दगी में आगे बढ़ेगी। बहुत ही महत्वपूर्ण है कि वे सुरक्षित होगी।

धन्यवाद।

सेवा बिहार की एक लाख महिला कामगार सदस्य

सेवा केरल ने मछली पकड़ने वाले कामगारों के लिये शौचालय की पुकार की।

सेवा केरला ने मजदूर दिवस मछली पकड़ने वाले पुरूष और महिलाओं के गांव में मनाया। मछली पकड़ने वालो के समुदाय में शौचालयों की बेहद कमी है। इस बात पर जोर दिया गया की मछली पकड़ने वाले परिवारों के लिय शौचालय बनाये जावे। ताकि पर्यायवरण स्वच्छ हो और वे उनका स्वास्थ बना रहे। कोई चमत्कार हो जाये और स्वच्छ भारत अभियान के साथ यह मुद्दा जुड़जाये। मछली पकड़ने वाली महिलाओं के लिये शौचालय बन जाये।